

Original Article

## FOLK ART AND TRIBAL ART: WITH SPECIAL REFERENCE TO MANDLA DISTRICT OF MADHYA PRADESH

## लोक कला एवं जनजातीय कला : मध्य प्रदेश के मंडला जिले के विशेष संदर्भ में

Dr. Naseem Bano <sup>1</sup>

<sup>1</sup> Senior Professor, Sociology, PMCOE-Rani Dargavati Shan Mahavidyalaya, Mandla, Madhya Pradesh, India



### ABSTRACT

**English:** Folk and tribal arts constitute an integral component of indigenous social life, functioning not merely as aesthetic practices but as systems of knowledge, cultural memory, and social organization. This paper presents an in-depth sociological study of folk and tribal art traditions in Mandla district of Madhya Pradesh, a predominantly tribal region inhabited mainly by Gond, Baiga, Bharia, and other indigenous communities. The study examines the distinctive art forms practiced by each tribe—such as Gond painting, Baiga wall art, ritual body tattooing, folk music, and dance—and situates them within their respective social, religious, ecological, and economic contexts.

Using qualitative research methods including ethnographic observation, semi-structured interviews, life-history narratives, and visual analysis of art forms, the paper analyzes how tribal art reflects social structure, gender roles, collective belief systems, and community-based modes of production. Drawing upon sociological theories of cultural functionalism, symbolic interactionism, and Bourdieu's concept of cultural capital, the study argues that tribal art in Mandla operates as a living social institution that sustains cultural continuity and reinforces collective identity.

A central contribution of this paper lies in its analysis of the dynamic interrelationship between tribal art and regional folk art. Rather than treating them as separate cultural categories, the study demonstrates that folk and tribal arts in Mandla exist along a cultural continuum shaped by shared rituals, festivals, ecological settings, and inter-community interaction. The paper further examines the impact of modernization, state intervention, and market integration on indigenous art practices, highlighting both opportunities for economic empowerment and risks of symbolic dilution and cultural commodification.

By foregrounding indigenous perspectives and contextualizing art within everyday social life, this study contributes to global sociological debates on indigenous knowledge systems, cultural sustainability, and the sociology of art in non-Western societies. The findings underscore the need to recognize tribal and folk arts not merely as heritage objects but as dynamic social processes essential to cultural resilience in an era of rapid globalization.

**Hindi:** लोक और आदिवासी कलाएँ स्थानीय सामाजिक जीवन का एक ज़रूरी हिस्सा हैं, जो सिर्फ एस्थेटिक प्रैक्टिस के तौर पर ही नहीं, बल्कि ज्ञान, सांस्कृतिक याद और सामाजिक संगठन के सिस्टम के तौर पर भी काम करती हैं। यह पेपर मध्य प्रदेश के मंडला जिले में लोक और आदिवासी कला परंपराओं की एक गहरी सोशियोलॉजिकल स्टडी पेश करता है। यह इलाका ज्यादातर आदिवासी है और यहाँ ज्यादातर गोंड, बैगा, भारिया और दूसरे आदिवासी समुदाय रहते हैं। यह स्टडी

#### \*Corresponding Author:

Email address: Dr. Naseem Bano ([naseembano016@gmail.com](mailto:naseembano016@gmail.com))

Received: 26 December 2025; Accepted: 28 January 2026; Published 28 February 2026

DOI: [10.29121/granthaalayah.v14.i2SCE.2026.6709](https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v14.i2SCE.2026.6709)

Page Number: 240-248

Journal Title: International Journal of Research -GRANTHAALAYAH

Journal Abbreviation: Int. J. Res. Granthaalayah

Online ISSN: 2350-0530, Print ISSN: 2394-3629

Publisher: Granthaalayah Publications and Printers, India

Conflict of Interests: The authors declare that they have no competing interests.

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Authors' Contributions: Each author made an equal contribution to the conception and design of the study. All authors have reviewed and approved the final version of the manuscript for publication.

Transparency: The authors affirm that this manuscript presents an honest, accurate, and transparent account of the study. All essential aspects have been included, and any deviations from the original study plan have been clearly explained. The writing process strictly adhered to established ethical standards.

Copyright: © 2026 The Author(s). This work is licensed under a [Creative Commons Attribution 4.0 International License](https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

हर जनजाति के खास कला रूपों – जैसे गोंड पेंटिंग, बैगा वॉल आर्ट, शरीर पर टैटू बनवाना, लोक संगीत और डांस – की जाँच करती है और उन्हें उनके अपने सामाजिक, धार्मिक, इकोलॉजिकल और आर्थिक संदर्भों में रखती है।

एथनोग्राफिक ऑब्जर्वेशन, सेमी-स्ट्रक्चर्ड इंटरव्यू, जीवन-इतिहास की कहानियाँ और कला रूपों के विजुअल एनालिसिस जैसे क्वालिटेटिव रिसर्च तरीकों का इस्तेमाल करके, यह पेपर एनालाइज़ करता है कि आदिवासी कला सामाजिक संरचना, जेंडर भूमिकाओं, सामूहिक विश्वास प्रणालियों और उत्पादन के समुदाय-आधारित तरीकों को कैसे दिखाती है। कल्चरल फंक्शनलिज़्म, सिंबॉलिक इंटरवैक्शनलिज़्म और बॉर्डियू के कल्चरल कैपिटल के कॉन्सेप्ट की सोशियोलॉजिकल थ्योरीज़ का इस्तेमाल करते हुए, स्टडी का तर्क है कि मंडला में ट्राइबल आर्ट एक जीवित सोशल इंस्टीट्यूशन के तौर पर काम करती है जो कल्चरल कंटिन्यूटी को बनाए रखती है और कलेक्टिव आइडेंटिटी को मज़बूत करती है।

इस पेपर का एक मुख्य योगदान ट्राइबल आर्ट और रीजनल फोक आर्ट के बीच डायनामिक इंटररिलेशनशिप के एनालिसिस में है। उन्हें अलग-अलग कल्चरल कैटेगरी के तौर पर देखने के बजाय, स्टडी दिखाती है कि मंडला में फोक और ट्राइबल आर्ट एक कल्चरल कंटिन्यूटी के साथ मौजूद हैं जो शेयर्ड रिचुअल्स, फेस्टिवल्स, इकोलॉजिकल सेटिंग्स और इंटर-कम्युनिटी इंटरवैक्शन से बनी है। पेपर आगे इंडिजिनस आर्ट प्रैक्टिस पर मॉडर्नाइज़ेशन, स्टेट इंटरवैक्शन और मार्केट इंटीग्रेशन के असर की जांच करता है, जिसमें इकोनॉमिक एम्पावरमेंट के मौकों और सिंबॉलिक डाइल्यूशन और कल्चरल कमोडिटीफिकेशन के रिस्क दोनों पर रोशनी डाली गई है। इंडिजिनस नज़रिए को सामने लाकर और रोज़मर्रा की सोशल लाइफ में आर्ट को कॉन्टेक्चुअलाइज़ करके, यह स्टडी इंडिजिनस नॉलेज सिस्टम, कल्चरल सस्टेनेबिलिटी और नॉन-वेस्टर्न सोसाइटीज़ में आर्ट की सोशियोलॉजी पर ग्लोबल सोशियोलॉजिकल डिबेट्स में योगदान देती है। नतीजे इस बात पर ज़ोर देते हैं कि आदिवासी और लोक कलाओं को सिर्फ विरासत की चीज़ों के तौर पर नहीं, बल्कि तेज़ी से ग्लोबलाइज़ेशन के इस दौर में सांस्कृतिक मज़बूती के लिए ज़रूरी गतिशील सामाजिक प्रक्रियाओं के तौर पर पहचान देने की ज़रूरत है।

**Keywords:** Folk Art, Tribal Art, Gond and Baiga Communities, Mandla District, Sociology of Culture, Indigenous Knowledge Systems, Cultural Continuity लोक कला, आदिवासी कला, गोंड और बैगा समुदाय, मंडला जिला, संस्कृति का समाजशास्त्र, स्वदेशी ज्ञान प्रणालियाँ, सांस्कृतिक निरंतरता

## प्रस्तावना

लोक कला और जनजातीय कला किसी भी समाज की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के मूल आधार होते हैं। ये कलाएँ केवल सौंदर्यात्मक गतिविधियाँ नहीं हैं बल्कि सामाजिक जीवन की संरचनाएँ सामूहिक स्मृतिएँ ज्ञान प्रणालियों और सांस्कृतिक पहचान की निरंतरता को बनाए रखने वाले माध्यम हैं। विशेष रूप से जनजातीय समाजों में कला जीवन से अलग कोई स्वतंत्र क्षेत्र नहीं होतीएँ बल्कि वह दैनिक व्यवहारएँ धार्मिक अनुष्ठानोंएँ सामाजिक संबंधों और आजीविका के तरीकों में अंतर्निहित रहती है। इस दृष्टि से लोक एवं जनजातीय कला को समाजशास्त्रीय अध्ययन के केंद्र में रखना आवश्यक हो जाता है।

भारतीय संदर्भ में जनजातीय कला पर हुए अधिकांश अध्ययन या तो मानवशास्त्रीय दृष्टिकोण तक सीमित रहे हैं अथवा कला को संग्रहालयीय वस्तु के रूप में प्रस्तुत करते हैं। ऐसे अध्ययनों में कला के सामाजिक कार्यएँ सामुदायिक संबंधों में उसकी भूमिका और सांस्कृतिक स्मृति के निर्माण में उसके योगदान पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया गया है। इसके अतिरिक्तएँ लोक कला और जनजातीय कला को प्रायः दो पृथक श्रेणियों के रूप में देखा जाता हैएँ जबकि व्यावहारिक स्तर पर दोनों के बीच गहरा अंतर्संबंध पाया जाता है। यह वैचारिक विभाजन जनजातीय समाजों की सांस्कृतिक वास्तविकताओं को पूर्णतः प्रतिबिंबित नहीं करता।

मध्य प्रदेश का मंडला जिला इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण अध्ययन क्षेत्र प्रस्तुत करता है। यह जिला जनजातीय बहुल हैएँ जहाँ गोंडएँ बैगाएँ भरिया तथा अन्य आदिवासी समुदाय निवास करते हैं। यहाँ की सामाजिक संरचनाएँ आजीविका और सांस्कृतिक जीवन प्राकृतिक परिवेशकृविशेषतः वनों और नर्मदा नदीकृसे गहराई से जुड़ा हुआ है। इस सामाजिक, पारिस्थितिक संदर्भ में विकसित लोक एवं जनजातीय कला परंपराएँ न केवल सौंदर्यबोध को अभिव्यक्त करती हैंएँ बल्कि सामूहिक विश्वास प्रणालियोंएँ सामाजिक संगठन और सांस्कृतिक उत्तराधिकार को भी सशक्त करती हैं।

मंडला जिले की जनजातीय कला परंपराओं में गोंड चित्रकलाएँ बैगा भित्ति कलाएँ शरीर पर गोदनाएँ लोक गीत और नृत्य जैसे विविध रूप शामिल हैं। ये कला रूप सामाजिक जीवन के विभिन्न आयामोंकृजैसे लिंग भूमिकाएँ सामुदायिक सहभागिताएँ धार्मिक अनुष्ठान और आजीविकाकृसे प्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं। उदाहरणतः चित्रकला और भित्ति कला केवल सजावटी माध्यम नहीं हैंएँ बल्कि वे प्रतीकों के माध्यम से सामाजिक स्मृति और विश्वदृष्टि को संप्रेषित करती हैं। इसी प्रकार लोक नृत्य और संगीत सामाजिक एकता और सांस्कृतिक अनुशासन को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

समकालीन दौर में आधुनिकीकरणएँ राज्य हस्तक्षेप और बाज़ारीकरण ने जनजातीय कला के स्वरूप और अर्थ में परिवर्तन की प्रक्रिया को तीव्र किया है। एक ओर इन प्रक्रियाओं ने कलाकारों के लिए नए आर्थिक अवसर उत्पन्न किए हैंएँ वहीं दूसरी ओर पारंपरिक प्रतीकों और अनुष्ठानिक अर्थों के क्षरण की आशंका भी बढ़ी है। इस संदर्भ में जनजातीय कला को केवल विरासत या शिल्प के रूप में नहींएँ बल्कि एक जीवंत सामाजिक संस्था के रूप में समझना आवश्यक हो जाता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र मंडला जिले की लोक एवं जनजातीय कला परंपराओं का समाजशास्त्रीय अध्ययन करते हुए यह विश्लेषण करने का प्रयास करता है कि ये कला रूप किस प्रकार सामाजिक संरचनाएँ सांस्कृतिक स्मृति और सामूहिक पहचान का निर्माण करते हैं। साथ ही यह अध्ययन लोक कला और जनजातीय कला के पारस्परिक संबंधों को रेखांकित करता है और उन्हें एक सांस्कृतिक निरंतरता के रूप में प्रस्तुत करता है। इस प्रकार यह शोध न केवल क्षेत्रीय स्तर परएँ बल्कि वैश्विक समाजशास्त्रीय विमर्श में भी स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों और सांस्कृतिक सततता की समझ को समृद्ध करता है।

## अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

- 1) मंडला जिले की प्रमुख लोक एवं जनजातीय कला रूपों की पहचान एवं विश्लेषण करना।
- 2) जनजातीय कला और सामाजिक संरचना के अंतर्संबंधों को समझना।
- 3) कला के माध्यम से जनजातीय समुदायों की सांस्कृतिक अस्मिता और सामूहिक चेतना का अध्ययन करना।
- 4) वैश्वीकरणएँ बाज़ारीकरण और आधुनिकीकरण के प्रभावों का समाजशास्त्रीय मूल्यांकन करना।

5) जनजातीय कला को एक जीवंत सामाजिक संस्था के रूप में स्थापित करना।

## शोध पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन गुणात्मक शोध पद्धति (Qualitative Research Methodology) पर आधारित है। इसमें निम्नलिखित विधियों का प्रयोग किया गया।

- नृवंशविज्ञानात्मक अवलोकन (Ethnographic Observation): मंडला जिले के चयनित ग्रामों में कला गतिविधियों का प्रत्यक्ष अवलोकन।
- अर्ध-संरचित साक्षात्कार (Semi-Structured Interviews): स्थानीय कलाकारों, बुजुर्गों और सांस्कृतिक कार्यकर्ताओं से संवाद।
- द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources): पुस्तकें, शोध पत्र, सरकारी रिपोर्ट्स एवं संग्रहालय अभिलेख।

इस पद्धति से कला को उसके सामाजिक, सांस्कृतिक संदर्भ में समझने का प्रयास किया गया है।

## मंडला जिले की जनजातीय संरचना

मध्य प्रदेश का मंडला जिला लोक एवं जनजातीय कला की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध क्षेत्र है। यहाँ की कला परंपराएँ केवल सौंदर्यबोध तक सीमित नहीं हैं बल्कि सामाजिक संरचना, धार्मिक विश्वास, पारिस्थितिक परिवेश और सामूहिक जीवन पद्धति से गहराई से जुड़ी हुई हैं। मंडला जिले की लोक एवं जनजातीय कला को समझने के लिए इसे जीवन-शैली, अनुष्ठानों और सामाजिक संबंधों के व्यापक संदर्भ में देखना आवश्यक है। यहाँ की कला परंपराएँ मुख्यतः गोंड, बैगा और भरिया जनजातियों के सामाजिक जीवन से विकसित हुई हैं जिनमें लोक संस्कृति के तत्व भी स्वाभाविक रूप से समाहित हैं।

### 1) गोंड चित्रकला (Gond Painting)

- मंडला जिले की सर्वाधिक प्रसिद्ध और पहचानकारी जनजातीय कला।
- प्रमुखतः गोंड जनजाति द्वारा विकसित।
- मुख्य विषय-
  - 1) वृक्ष, पशु-पक्षी, सूर्य-चंद्रमा
  - 2) देवी-देवता एवं लोककथाएँ
- शैलीगत विशेषताएँ-
  - 1) बिंदु और लयात्मक रेखाओं का प्रयोग
  - 2) आकृतियों में गति और जीवन्तता
- समाजशास्त्रीय महत्व-
  - 1) प्रकृति-केंद्रित विश्वदृष्टि की अभिव्यक्ति
  - 2) सामूहिक स्मृति और मौखिक परंपराओं का दृश्य रूपांतरण

मंडला जिले की जनजातीय कला का सबसे प्रमुख रूप गोंड चित्रकला है। यह कला रूप प्रतीकात्मकता और प्रकृति-केंद्रित दृष्टिकोण के लिए जाना जाता है। गोंड चित्रों में वृक्ष, पशु, पक्षी, सूर्य, चंद्रमा और देवी-देवताओं को विशेष शैली में दर्शाया जाता है। बिंदुओं, लयात्मक रेखाओं और जीवंत रंगों के माध्यम से आकृतियों में गति और जीवन का संचार किया जाता है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से गोंड चित्रकला गोंड समाज की विश्वदृष्टि को अभिव्यक्त करती है जहाँ मानव, प्रकृति और आध्यात्मिक शक्तियाँ परस्पर जुड़ी हुई मानी जाती हैं। यह कला सामूहिक स्मृति और मौखिक परंपराओं को दृश्य रूप प्रदान करती है।

### 2) बैगा भित्ति कला (Baiga Wall Art)

- बैगा जनजाति की विशिष्ट कला परंपरा।
- घरों की दीवारों और आंगनों पर चित्रांकन।
- प्रमुख विषय-
  - 1) कृषि चक्र
  - 2) प्राकृतिक शक्तियाँ
  - 3) तांत्रिक एवं अनुष्ठानिक प्रतीक
- कार्यात्मक भूमिका-
  - 1) सामाजिक और आध्यात्मिक सुरक्षा
  - 2) रोग-निवारण और शुभता का विश्वास
- समाजशास्त्रीय दृष्टि-

- 1) कला का धार्मिक, अनुष्ठानिक उपयोग
- 2) सामाजिक विश्वासों का दृश्य संप्रेषण

बैगा जनजाति की भित्ति कला मंडला जिले की एक अन्य महत्वपूर्ण कला परंपरा है। बैगा समुदाय के घरों की दीवारों और आंगनों पर बनाए जाने वाले चित्र धार्मिक और अनुष्ठानिक महत्व रखते हैं। इनमें कृषि चक्र, प्राकृतिक शक्तियाँ, रोग, निवारण से जुड़े प्रतीक और तांत्रिक चिन्ह सम्मिलित होते हैं। यह कला केवल सजावटी नहीं होती, बल्कि सामाजिक और आध्यात्मिक सुरक्षा से जुड़ी मानी जाती है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से बैगा भित्ति कला यह दर्शाती है कि कला किस प्रकार सामाजिक विश्वासों और व्यवहारिक आवश्यकताओं से जुड़कर एक कार्यात्मक भूमिका निभाती है।

### 3) गोदना कला (Tattoo / Body Art)

- बैगा और गोंड समुदायों में प्रचलित।
- विशेषतः महिलाओं से जुड़ी कला।
- गोदने के प्रमुख अर्थ-
  - 1) स्त्री पहचान और सौंदर्यबोध
  - 2) सामाजिक स्थिति और वैवाहिक संकेत
- सांस्कृतिक महत्व-
  - 1) शरीर को सांस्कृतिक प्रतीक में रूपांतरित करना
  - 2) जीवन भर स्थायी सांस्कृतिक पहचान
- समाजशास्त्रीय व्याख्या-
  - 1) शरीर एक सांस्कृतिक पाठ के रूप में कार्य करता है

मंडला जिले में शरीर सज्जा की कलाएँ विशेषतः गोदना (टैटू) जनजातीय कला का एक महत्वपूर्ण रूप है। बैगा और गोंड समुदायों में गोदना स्त्रियों की सांस्कृतिक पहचान, सौंदर्यबोध और सामाजिक स्थिति से जुड़ा हुआ है। गोदने में प्रयुक्त प्रतीक धार्मिक विश्वासों और सामाजिक स्मृति को शरीर पर अंकित कर देते हैं। इस प्रकार शरीर स्वयं एक सांस्कृतिक पाठ बन जाता है जो जीवन भर व्यक्ति की पहचान को अभिव्यक्त करता है।

### 4) लोक नृत्य (Folk and Tribal Dances)

- प्रमुख नृत्य रूप-
  - 1) कर्मा
  - 2) सैला
  - 3) रीना
- सामाजिक संदर्भ-
  - 1) कृषि चक्र
  - 2) पर्व, त्योहार
  - 3) सामूहिक अनुष्ठान
- विशेषताएँ-
  - 1) सामूहिक सहभागिता
  - 2) पुरुष, महिला सहयोग
- समाजशास्त्रीय महत्व-
  - 1) सामाजिक एकता और सामूहिक चेतना
  - 2) सांस्कृतिक अनुशासन और भावनात्मक अभिव्यक्ति

लोक नृत्य मंडला जिले की लोक एवं जनजातीय कला के महत्वपूर्ण आयाम हैं। कर्मा, सैला और रीना जैसे नृत्य सामूहिक उत्सवों, कृषि चक्र और धार्मिक आयोजनों से जुड़े होते हैं। इन नृत्यों में पुरुष और महिलाएँ सामूहिक रूप से भाग लेते हैं, जिससे सामाजिक एकता और सहयोग की भावना को बल मिलता है। संगीत और नृत्य यहाँ केवल मनोरंजन का सा

धन नहीं, बल्कि सामाजिक अनुशासन, भावनात्मक अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक निरंतरता का माध्यम हैं।

### 5) लोक संगीत एवं गीत

- दैनिक जीवन और पर्वों से जुड़ा।
- विषयवस्तु-

- 1) प्रकृति
- 2) प्रेमए श्रम और सामाजिक संबंध
- 3) धार्मिक आस्था
- भूमिका-
  - 1) मौखिक परंपरा का संरक्षण
  - 2) सांस्कृतिक ज्ञान का पीढ़ीगत हस्तांतरण
- समाजशास्त्रीय महत्व-
  - 1) सामूहिक स्मृति का संचार माध्यम

मंडला जिले का लोक संगीत एवं लोक गीत जनजातीय और ग्रामीण समाज के दैनिक जीवन तथा पर्व, त्योहारों से घनिष्ठ रूप से जुड़े हुए हैं। ये गीत प्रकृति, प्रेम, श्रम और सामाजिक संबंधों के विविध पक्षों को अभिव्यक्त करते हैं तथा धार्मिक आस्था और विश्वास प्रणालियों को भी सजीव रूप में प्रस्तुत करते हैं। खेतों में कार्य करते समय गाए जाने वाले श्रम गीत एवं पर्वों के अवसर पर गाए जाने वाले सामूहिक गीत तथा धार्मिक अनुष्ठानों से जुड़े भजन लोक जीवन की भावनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम हैं। लोक संगीत की एक प्रमुख भूमिका मौखिक परंपरा के संरक्षण में निहित है क्योंकि इसके माध्यम से ऐतिहासिक अनुभव सामाजिक मूल्य और सांस्कृतिक ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता रहता है।

### 6) लोक शिल्प एवं (Folk Crafts)

- प्रयुक्त सामग्री-
  - 1) बाँस
  - 2) लकड़ी
  - 3) मिट्टी
- उत्पाद-
  - 1) घरेलू उपयोग की वस्तुएँ
  - 2) सजावटी एवं अनुष्ठानिक सामग्री
- विशेषताएँ-
  - 1) स्थानीय संसाधनों पर आधारित
  - 2) पारंपरिक ज्ञान का प्रयोग
- समाजशास्त्रीय महत्व-
  - 1) आत्मनिर्भरता
  - 2) प्रकृति के साथ सहजीवन

इसके अतिरिक्त लोक शिल्प और हस्तकला भी मंडला जिले की कला परंपरा का अभिन्न अंग हैं। बाँस, लकड़ी और मिट्टी से बनी वस्तुएँ दैनिक जीवन की आवश्यकताओं के साथ-साथ सांस्कृतिक प्रतीकों को भी अभिव्यक्त करती हैं। ये शिल्प स्थानीय संसाधनों और पारंपरिक ज्ञान पर आधारित हैं जो जनजातीय समाज की आत्मनिर्भरता और प्रकृति के साथ सहजीवन को दर्शाते हैं।

## भरिया जनजाति और क्षेत्रीय लोक कला

भरिया जनजाति मध्य भारत की एक महत्वपूर्ण जनजातीय समुदाय है जिसकी उपस्थिति मध्य प्रदेश के कुछ क्षेत्रों विशेषतः मंडला जिले के सीमावर्ती भागों में पाई जाती है। सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भरिया जनजाति की पहचान कृषि, आधारित जीवन शैली, सामुदायिक संगठन और क्षेत्रीय लोक संस्कृति से गहरे जुड़ाव के रूप में उभरती है। अन्य जनजातियों की तुलना में भरिया समुदाय की कला परंपराएँ अपेक्षाकृत कम विशिष्ट प्रतीकात्मक रूपों में विकसित हुई हैं किंतु उनकी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ स्थानीय लोक कला से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई हैं।

भरिया जनजाति की कला परंपराओं में लोक गीत, लोक नृत्य और हस्तनिर्मित सजावटी वस्तुएँ प्रमुख हैं। ये कला रूप प्रायः कृषि चक्र, मौसमी परिवर्तन, पारिवारिक उत्सव और धार्मिक अवसरों से जुड़े होते हैं। भरिया लोक गीतों में प्रकृति, श्रम, प्रेम और सामाजिक संबंधों की अभिव्यक्ति स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इन गीतों की भाषा धुन और भाव, भूमि, क्षेत्रीय लोक संस्कृति से इतनी निकटता रखती है कि उन्हें जनजातीय और लोक कला के बीच की सेतु के रूप में देखा जा सकता है।

समाजशास्त्रीय दृष्टि से भरिया जनजाति की कला यह स्पष्ट करती है कि जनजातीय और लोक कला के बीच कोई कठोर सीमा नहीं होती। भरिया समुदाय के नृत्य और संगीत क्षेत्रीय लोक पर्वों का अभिन्न अंग बन चुके हैं जिससे सांस्कृतिक अंतःक्रिया और सामाजिक समावेशन की प्रक्रिया को समझा जा सकता है। यह स्थिति दर्शाती है कि भरिया जनजाति की कला परंपराएँ एक पृथक पहचान बनाए रखने की अपेक्षा साझा सांस्कृतिक संसार में सहभागी भूमिका निभाती हैं।

भरिया जनजाति की हस्तकला और सजावटी परंपराएँ भी स्थानीय संसाधनों पर आधारित हैं। बाँसएँ लकड़ी और मिट्टी से निर्मित वस्तुएँ दैनिक उपयोग के साथ-साथ सांस्कृतिक प्रतीकों को भी अभिव्यक्त करती हैं। इन शिल्पों में उपयोगिता और सौंदर्य का संतुलन दिखाई देता है जो लोक कला की मूल विशेषता मानी जाती है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि भरिया जनजाति की कला जीवनोपयोगी है और सामाजिक व्यवहार से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ी हुई है।

क्षेत्रीय लोक कला के साथ भरिया जनजाति का यह घनिष्ठ संबंध सांस्कृतिक अनुकूलन और सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को भी प्रतिबिंबित करता है। आधुनिकीकरण और बाहरी प्रभावों के बावजूद भरिया समुदाय की कला परंपराएँ स्थानीय लोक संस्कृति में समाहित होकर अपनी निरंतरता बनाए रखती हैं। इस संदर्भ में भरिया जनजाति की कला को एक सांस्कृतिक मध्यस्थ के रूप में देखा जा सकता है जो जनजातीय और लोक समाज के बीच संवाद और सामंजस्य स्थापित करती है।

## लोक कला और जनजातीय कला का पारस्परिक संबंध

- समान तत्व-
  - 1) पर्व. त्योहार
  - 2) प्रतीक और कथाएँ
  - 3) सामाजिक अवसर
- जनजातीय कला → लोक परंपरा का हिस्सा बनती है।
- समाजशास्त्रीय निष्कर्ष-
  - 1) दोनों एक सांस्कृतिक निरंतरता (**Cultural Continuum**) में स्थित हैं

समग्र रूप से देखा जाए तो मंडला जिले की लोक एवं जनजातीय कला बहुआयामी है और जीवन के विभिन्न पक्षों से गहराई से जुड़ी हुई है। ये कला रूप सामाजिक संरचनाएँ धार्मिक विश्वासएँ पारिस्थितिक संतुलन और सामूहिक पहचान को अभिव्यक्त करते हैं। लोक और जनजातीय कला यहाँ परस्पर अलग नहीं बल्कि एक-दूसरे में घुली-मिली हुई दिखाई देती हैं जिससे एक साझा सांस्कृतिक संसार का निर्माण होता है। इस दृष्टि से मंडला जिले की कला परंपराएँ समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे कला और समाज के गहरे अंतर्संबंधों को स्पष्ट रूप से उजागर करती हैं।

लोक कला और जनजातीय कला को अक्सर अलग-अलग श्रेणियों में रखा जाता है किंतु मंडला जिले के संदर्भ में यह विभाजन व्यावहारिक नहीं है।

- अनेक जनजातीय नृत्य लोक पर्वों का हिस्सा बन चुके हैं
- भित्ति चित्र जनजातीय परंपरा से निकलकर क्षेत्रीय लोक कला में समाहित हो गए हैं
- प्रतीकएँ रंग और कथाएँ साझा सांस्कृतिक संसार का निर्माण करती हैं

समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह एक सांस्कृतिक निरंतरता को दर्शाता है न कि अलगाव को।

## सैद्धांतिक विश्लेषण

### सांस्कृतिक कार्यात्मकता (CULTURAL FUNCTIONALISM)

सांस्कृतिक कार्यात्मकता के सिद्धांत के अनुसार समाज की प्रत्येक सांस्कृतिक संस्था सामाजिक व्यवस्था और संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जनजातीय कला इस दृष्टि से सामाजिक एकता को सुदृढ़ करने का कार्य करती है क्योंकि इसका निर्माण और उपभोग सामूहिक रूप से होता है। लोक नृत्यएँ गीतएँ चित्रकला और अनुष्ठानिक कला समुदाय के सदस्यों को एक साझा सांस्कृतिक मंच प्रदान करती है जिससे आपसी संबंध मजबूत होते हैं। साथ ही ये कला रूप सांस्कृतिक संचार का माध्यम बनकर सामाजिक मूल्यएँ परंपराएँ और विश्वास पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करते हैं जिससे सांस्कृतिक निरंतरता बनी रहती है।

### प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद (SYMBOLIC INTERACTIONISM)

प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के अनुसार समाज में अर्थों का निर्माण प्रतीकों और सामाजिक अंतःक्रियाओं के माध्यम से होता है। जनजातीय कला में प्रयुक्त प्रतीककैसे पेड़एँ पशुएँ रंगएँ आकृतियाँ और नृत्य की मुद्राएँकेवल सजावटी तत्व नहीं होते बल्कि वे सामूहिक अर्थों और सामाजिक अनुभवों को अभिव्यक्त करते हैं। इन प्रतीकों के माध्यम से समुदाय अपनी पहचानएँ विश्वास प्रणालियों और सामाजिक मूल्यों को वैधता प्रदान करता है। इस प्रकार जनजातीय कला सामाजिक पहचान के निर्माण और उसकी स्वीकृति का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन जाती है।

### सांस्कृतिक पूँजी (CULTURAL CAPITAL)

सांस्कृतिक पूँजी की अवधारणा के अनुसार सांस्कृतिक ज्ञानएँ कौशल और प्रतीक सामाजिक प्रतिष्ठा और संसाधनों में परिवर्तित हो सकते हैं। समकालीन संदर्भ में जनजातीय कला एक पारंपरिक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति से आगे बढ़कर सांस्कृतिक पूँजी का रूप ले रही है। गाँव और अन्य जनजातीय कला रूपों की राष्ट्रीय और

अंतरराष्ट्रीय पहचान ने कलाकारों को आर्थिक अवसरए सामाजिक सम्मान और नई पहचान प्रदान की है। यद्यपि इससे सशक्तिकरण की संभावनाएँ उत्पन्न हुई हैं फिर भी यह प्रक्रिया कला के बाज़ारीकरण और उसके पारंपरिक अर्थों में परिवर्तन जैसी चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करती है।

## आधुनिकीकरण और बाज़ारीकरण का प्रभाव

आधुनिकीकरण और बाज़ारीकरण की प्रक्रियाओं ने जनजातीय कला को स्थानीय सीमाओं से बाहर निकालकर राष्ट्रीय और वैश्विक मंच प्रदान किया है। राज्य संस्थानोंए गैर.सरकारी संगठनोंए कला मेलों और डिजिटल माध्यमों के माध्यम से जनजातीय कला को नई पहचान और आर्थिक अवसर प्राप्त हुए हैं। इससे अनेक जनजातीय कलाकारों की आजीविका में सुधार हुआ है तथा उनकी कला को सामाजिक मान्यता भी मिली है। किंतु इस सकारात्मक परिवर्तन के साथ.साथ कई जटिल समस्याएँ भी उभरकर सामने आई हैं जिनका समाजशास्त्रीय विश्लेषण आवश्यक है।

आधुनिक बाज़ार की मांग के अनुरूप कला के उत्पादन ने प्रतीकों के सरलीकरण की प्रक्रिया को तेज किया है। पारंपरिक जनजातीय कला में प्रयुक्त प्रतीक बहुस्तरीय अर्थों से युक्त होते हैं जिनका संबंध धार्मिक विश्वासोंए सामाजिक स्मृति और अनुष्ठानों से होता है। बाज़ार के दबाव में इन जटिल प्रतीकों को सरलए आकर्षक और शीघ्र बिकाऊ रूपों में बदल दिया जाता है। परिणामस्वरूप कला की गहराई और सांस्कृतिक संदर्भ धीरे.धीरे सीमित होते जाते हैं।

इसी प्रक्रिया से जुड़ी एक अन्य महत्वपूर्ण समस्या है अनुष्ठानिक अर्थों का क्षरण। परंपरागत रूप से जनजातीय कला धार्मिक अनुष्ठानोंए पर्वों और सामाजिक अवसरों से जुड़ी होती थी। जब वही कला बाज़ार के लिए उत्पादित वस्तु बन जाती है तो उसका अनुष्ठानिक और सामुदायिक महत्व कम हो जाता है। कला अब सामाजिक जीवन का अंग न रहकर प्रदर्शन या सजावट की वस्तु बनती जा रही है जिससे उसके मूल सांस्कृतिक अर्थ प्रभावित होते हैं।

इसके अतिरिक्तए बाज़ारीकरण की प्रक्रिया ने जनजातीय कला को वस्तुकरण (**Commodification**) की ओर अग्रसर किया है। कला को उसकी सामाजिक और सांस्कृतिक भूमिका से अलग कर एक आर्थिक उत्पाद के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा है। इस प्रक्रिया में कलाकार की रचनात्मक स्वतंत्रता सीमित हो जाती है और कला उत्पादन बाज़ार की मांग द्वारा नियंत्रित होने लगता है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह स्थिति शक्ति.संबंधों और सांस्कृतिक असमानताओं को भी उजागर करती है जहाँ बाहरी संस्थाएँ और उपभोक्ता कला के स्वरूप को निर्धारित करते हैं।

हालाँकि यह भी ध्यान देने योग्य है कि बाज़ारीकरण पूरी तरह नकारात्मक नहीं है। इसने कुछ हद तक जनजातीय कलाकारों को आर्थिक आत्मनिर्भरता और सामाजिक पहचान प्रदान की है। किंतु चुनौती यह है कि आर्थिक सशक्तिकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के बीच संतुलन कैसे स्थापित किया जाए। यदि यह संतुलन नहीं बन पायाए तो जनजातीय कला अपने मूल सामाजिक संदर्भ से कटकर केवल सजावटी या व्यावसायिक वस्तु बनकर रह जाएगी।

## मंडला जिले की जनजातीय संस्कृति के अध्ययन में योगदान

### वैरियर एल्विन (Verrier Elwin)

#### भूमिका

- मानवविज्ञानीए नृवंशविज्ञानीए जनजातीय कार्यकर्ता
- बैगा और गोंड जनजातियों के साथ प्रत्यक्ष क्षेत्रीय कार्य
- बैगा चक (मंडलादंडिंडोरी क्षेत्र) में दीर्घकालिक निवास

#### मंडला से संबंध

- मंडला जिले के बैगा.बहुल क्षेत्रों में रहकर सामाजिकए धार्मिक और कलात्मक जीवन का अध्ययन
- बैगा संस्कृतिए कलाए लोककथाओं और जीवन पद्धति का व्यवस्थित दस्तावेज़ीकरण

#### प्रमुख पद

- भारत सरकार में जनजातीय मामलों के सलाहकार
- उत्तर.पूर्व सीमांत एजेंसी (NEFA) के जनजातीय नीति सलाहकार

#### सम्मान / पुरस्कार

- पद्म भूषण (1961)- भारत सरकार
- अंतरराष्ट्रीय मानवविज्ञान जगत में प्रतिष्ठा

## परिचय और जीवन पृष्ठभूमि

वैरियर एल्विन बीसवीं शताब्दी के उन विद्वानों में से थे जिन्होंने जनजातीय समाजों के अध्ययन को केवल अकादमिक विषय न मानकर जीवनानुभव का हिस्सा बनाया। ब्रिटिश मूल के होने के बावजूद उन्होंने भारत को अपना कर्मक्षेत्र और जीवनभूमि बनाया। प्रारंभिक जीवन में उनका संपर्क धार्मिक कार्यों से रहा किंतु शीघ्र ही उनका झुकाव मध्य भारत के जनजातीय समाजों की सामाजिक.सांस्कृतिक वास्तविकताओं को समझने की ओर हुआ। समय के साथ वे भारतीय समाज का अभिन्न अंग बन गए और जनजातीय समुदायों के प्रति एक संवेदनशील दृष्टिकोण विकसित किया।

## मंडला जिले में क्षेत्रीय निवास और अध्ययन पद्धति

मध्य प्रदेश के मंडला जिले के बैगा, बहुल क्षेत्रों में वैरियर एल्विन ने लंबे समय तक निवास किया। विशेष रूप से बैगा चक क्षेत्र के गाँवों में रहकर उन्होंने जनजातीय जीवन को निकट से देखा और समझा। उनका अध्ययन केवल अवलोकन तक सीमित नहीं थाय वे समुदाय के दैनिक जीवन और श्रम पर धार्मिक अनुष्ठानों और सामाजिक संबंधों में सक्रिय रूप से सहभागी बने। यह पद्धति उन्हें जनजातीय समाज के आंतरिक दृष्टिकोण को समझने में सक्षम बनाती है जो उस समय के अधिकांश बाहरी अध्ययनों से भिन्न थी।

## जनजातीय कला और सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों का दस्तावेज़ीकरण

वैरियर एल्विन का एक महत्वपूर्ण योगदान यह रहा कि उन्होंने बैगा और गोंड जनजातियों की कलाएँ लोककथाओं, गीतों और अनुष्ठानों को व्यवस्थित रूप से संकलित और अभिलेखित किया। मंडला जिले के संदर्भ में उनके अध्ययन ने यह स्पष्ट किया कि जनजातीय कला केवल सौंदर्य की अभिव्यक्ति नहीं है बल्कि सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग है। भित्ति चित्र, प्रतीकात्मक चित्रांकन, लोकगीत और अनुष्ठानिक परंपराएँ उनके लिए सांस्कृतिक स्मृति और सामूहिक चेतना की अभिव्यक्ति थीं।

## शोधात्मक योगदान और बौद्धिक उत्पादकता

वैरियर एल्विन की विद्वतापूर्ण सक्रियता उनके लेखन में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उनके ग्रंथों में जनजातीय समाज की सामाजिक संरचनाएँ धार्मिक विश्वास और सांस्कृतिक मूल्यों का विस्तृत विवेचन मिलता है। विशेष रूप से बैगा जनजाति पर आधारित उनके अध्ययन ने मंडला जिले और उसके आसपास के क्षेत्रों की जनजातीय संस्कृति को अकादमिक जगत में पहचान दिलाई। उनके लेखन की विशेषता यह है कि उसमें वर्णनात्मक विवरण के साथ मानवीय संवेदनशीलता भी निहित है।

## जनजातीय कल्याण और नीतिगत दृष्टि

वैरियर एल्विन का योगदान केवल शोध तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने जनजातीय समाजों के संरक्षण और सम्मानजनक विकास के पक्ष में विचार प्रस्तुत किए। उनका मानना था कि जनजातीय समुदायों की कलाएँ संस्कृति और जीवन शैली को बनाए रखते हुए ही सामाजिक परिवर्तन को सार्थक बनाया जा सकता है। इस दृष्टि से उनके विचार मंडला जिले की जनजातीय कला और संस्कृति के संरक्षण से सीधे जुड़े हुए हैं।

## अर्जुन सिंह धुर्वे : मंडला जिले की जनजातीय कला के प्रतिनिधि कलाकार

अर्जुन सिंह धुर्वे मध्य प्रदेश के मंडला जिले से संबंधित गोंड जनजातीय कलाकार हैं जिन्होंने पारंपरिक गोंड चित्रकला को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनकी कला प्रकृति, लोकविश्वास, जनजातीय मिथकों और दैनिक जीवन के अनुभवों पर आधारित है जिसमें पारंपरिक प्रतीकों और समकालीन संवेदनाओं का संतुलित समावेश दिखाई देता है।

अर्जुन सिंह धुर्वे ने गोंड कला की पारंपरिक शैलियों, जैसे सूक्ष्म रेखांकन, बिंदु संरचना और प्रतीकात्मक आकृतियों को संरक्षित रखते हुए उसे आधुनिक कला मंचों तक पहुँचाया। उनकी कृतियाँ यह दर्शाती हैं कि जनजातीय कला केवल अतीत की विरासत नहीं है बल्कि एक जीवंत और सतत विकसित होने वाली सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है।

जनजातीय कला के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें भारत सरकार द्वारा पद्मश्री सम्मान से अलंकृत किया गया। यह सम्मान न केवल व्यक्तिगत उपलब्धि का प्रतीक है बल्कि मंडला जिले की गोंड कला परंपरा की राष्ट्रीय स्वीकृति को भी रेखांकित करता है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से अर्जुन सिंह धुर्वे का कार्य यह सिद्ध करता है कि जनजातीय कलाकार सांस्कृतिक पूँजी के वाहक बनकर सामाजिक प्रतिष्ठा और आर्थिक संभावनाओं के नए आयाम खोल सकते हैं।

## हैदर रज़ा और मंडला जिले की कलात्मक चेतना

हैदर रज़ा भारतीय आधुनिक चित्रकला के अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित कलाकार थे जिनका जन्म मध्य प्रदेश में हुआ और जिनकी प्रारंभिक संवेदनाएँ नर्मदा अंचल तथा मंडला क्षेत्र की प्राकृतिक और सांस्कृतिक भूमि से प्रभावित रहीं। यद्यपि वे सीधे तौर पर मंडला जिले के जनजातीय कलाकार नहीं थे फिर भी मंडला और आसपास के वन, नदी, भूमि तथा जनजातीय जीवन की लय ने उनके कलात्मक दृष्टिकोण को गहराई से प्रभावित किया।

## निष्कर्ष

मध्य प्रदेश के मंडला जिले के विशेष संदर्भ में लोककला एवं जनजातीय कला का यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि ये कला रूप केवल सौंदर्यात्मक अभिव्यक्तियाँ नहीं हैं बल्कि वे स्थानीय समाज की संरचनाएँ सांस्कृतिक स्मृति, धार्मिक विश्वासों और सामूहिक पहचान के महत्वपूर्ण सामाजिक संस्थान हैं। मंडला जिले में निवास

करने वाली गोंडए बैगाए भरिया तथा अन्य जनजातियों की कला परंपराएँ उनके दैनिक जीवनए प्रकृति के साथ संबंधए श्रम व्यवस्था और सामाजिक मूल्यों को अभिव्यक्त करती हैं। इस प्रकारए जनजातीय और लोक कला दोनों मिलकर क्षेत्रीय सांस्कृतिक निरंतरता को बनाए रखने में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि मंडला जिले की लोककला और जनजातीय कला के बीच कोई कठोर विभाजन नहीं है बल्कि दोनों एक सांस्कृतिक निरंतरता (cultural continuum) के रूप में विकसित हुई हैं। क्षेत्रीय पर्वए अनुष्ठानए लोक गीत और नृत्य जनजातीय तथा गैर-जनजातीय समुदायों के बीच सांस्कृतिक अंतःक्रिया को सुदृढ़ करते हैं। भरिया जनजाति की कला परंपराएँ इस अंतर्संबंध का विशेष उदाहरण प्रस्तुत करती हैं जहाँ जनजातीय कला क्षेत्रीय लोक संस्कृति में समाहित होकर एक साझा सामाजिक पहचान का निर्माण करती है।

सैद्धांतिक दृष्टि से यह शोध दर्शाता है कि जनजातीय कला सांस्कृतिक कार्यात्मकता के अंतर्गत सामाजिक एकता और पीढ़ीगत निरंतरता का कार्य करती है। प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के अनुसार सामूहिक अर्थों और सामाजिक पहचान को वैधता प्रदान करती है तथा सांस्कृतिक पूँजी के रूप में समकालीन समाज में नई सामाजिक और आर्थिक संभावनाएँ उत्पन्न कर रही है। हालांकिए आधुनिकीकरण और बाज़ारीकरण की प्रक्रियाओं ने इन कला रूपों को वैश्विक मंच प्रदान किया है किंतु इसके साथ प्रतीकों के सरलीकरणए अनुष्ठानिक अर्थों के क्षरण और कला के वस्तुकरण जैसी चुनौतियाँ भी सामने आई हैं।

अतः यह आवश्यक हो जाता है कि जनजातीय और लोक कला के संरक्षण की नीतियाँ केवल आर्थिक लाभ तक सीमित न रहें बल्कि उनके सामाजिकए सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक आयामों को भी समान महत्व दिया जाए। मंडला जिले के संदर्भ में जनजातीय कला को एक जीवंत सामाजिक प्रक्रिया के रूप में समझना और संरक्षित करना न केवल स्थानीय सांस्कृतिक अस्मिता के लिए आवश्यक है बल्कि यह वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक विविधता और सांस्कृतिक न्याय की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

## REFERENCES

- Bourdieu, P. (1986). Forms of Cultural Capital (सांस्कृतिक पूँजी के रूप) (Hindi trans.). Samajik Vigyan Prakashan.
- Chakravarti, N. (2012). Tribal Art and Symbols (जनजातीय कला और प्रतीक). K. P. Bagchi and Company.
- Dhurve, A. S. (n.d.). Gond Painting: Tradition, Symbols and Contemporary Expressions (गोंड चित्रकला: परंपरा, प्रतीक और समकालीन अभिव्यक्ति). Madhya Pradesh Tribal Museum Publication.
- Elwin, V. (2004). The Baiga (बैगा). Oxford University Press.
- Elwin, V. (2011). Tribes of India (भारत की जनजातियाँ). National Book Trust.
- Government of Madhya Pradesh. (2018). Tribal Culture and Art of Madhya Pradesh (मध्य प्रदेश की जनजातीय संस्कृति एवं कला). Tribal Affairs Department.
- Kumar, N. (2015). Folk Culture and Society (लोक संस्कृति और समाज). Rajkamal Prakashan.
- Mishra, R. (2014). Indian Tribal Society: Structure and Culture (भारतीय जनजातीय समाज: संरचना एवं संस्कृति). Chaukhamba Prakashan.
- Pandey, S. (2017). Folk Art: Form and Social Context (लोक कला: स्वरूप और सामाजिक संदर्भ). Madhya Pradesh Hindi Granth Academy.
- Raza, S. H. (2010). Bindu: Art, Philosophy and Experience (बिंदु: कला, दर्शन और अनुभूति). National Gallery of Modern Art.
- Sharma, R. (2016). Indian Society and Culture (भारतीय समाज और संस्कृति). McGraw Hill Education.
- Singh, K. S. (1994). Tribal People of India (भारत के जनजातीय लोग). Oxford University Press.
- Singh, Y. (2009). Social Change in Modern India (आधुनिक भारत में सामाजिक परिवर्तन). Rawat Publications.
- Turner, V. (2010). Ritual and Symbol (अनुष्ठान और प्रतीक) (Hindi ed.). Rawat Publications.